ISSN: 0973-0583

गुमनाम वीरांगनायें : महिला स्वतंत्रता सेनानियाँ

श्यामली सलकर
शोध छात्रा, इतिहास विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखंड)
डॉ० चंदन कुमार
सीमेट्री रोड, हजारीबाग (झारखंड)

सार

हमारे ख्यातनाम स्वतंत्रता सेनानियों के अलावा ऐसे बहुत से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे हैं जिनके नाम इतिहास की किताबों के पन्नों से गायब है यह लोग इन लोगों के बारे में बहुत कम जानते हैं। ऐसे गुमनाम स्वतंत्र सेनानियों और शहीदों के बारे में जानकारी नहीं है हमारी नायिका गुमनामी के अंधेरों में खो गई हैं हालांकि जहां तक त्याग और तपस्या की बात है तो उन्होंने बहुत सारे बलिदान दिए हैं और इनका बलिदान पुरुषों से कम नहीं है सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने यह कभी भी चिंता नहीं की कि उन्हें प्रसिद्ध होना है या वह गुमनाम बने रहेंगे क्योंकि उन सभी का उद्देश्य देश को आजाद दिलाना इस देश के नागरिक होने के कारण उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझा कि उन्हें देश आजाद कराना है सेनानी जो गुमनामी के अंधेरों में खो गए हैं, उनका काम सिर्फ और सिर्फ देश सेवा करना था। ऐसे कई नाम है जिनका जिक्र मैं कर रही हूँ मातंगिनी हाजरा, बेगम हजरत महल, सेनापति बापट तारा, कित्तूर रानी चेन्नम्मा, अरूणा आसफ अली, उषामेहता, बीकाजी कामा, लक्ष्मी सहगल, कस्तूरबा गांधी, अंजलाई अममल, अक्कम्मा चेरियन, अजीजन बाई, अवंतीबाई, इंदुमती सिंह उज्वला मजूमदार, ऊदा देव, चारूशीला देवी, झलकारी बाई, दुर्गा भाभी, पूर्णिमा बनर्जी प्रीतीलता वद्देदार विमला प्रतिभा देवी, शोभा रानी दत्त, सुचेता कृपलानी, सुहासिनी गांगूली, ननीबाला घोष, कल्पना दत्त, कल्याणी दास एवं चंद्रशेखर आजाद की माता जगरानी देवी, शहीद भगत सिंह की माताजी विद्यावती कौर और ऐसी बहुत सारी शहीद महिलाएँ हैं इतिहास पन्नों में इनके नाम तो जरूर है, पर वह स्थान वह सम्मान जो इन्हें देने चाहिए, उसमें कमी रह गई।

शब्द कुँजी: गुमनाम, नायिका, आजादी, महिला का सम्मान, चित्रण, श्रद्धांजलि, शहीद, बलिदान, वीरता, समर्पण

भारतीय महिलाओं की बात होती है तो हमेशा उनका रोना बिलखना चित्रन किया जाता है। साहित्य में तो मध्यकालीन तथा वैदिक स्त्रियां की उपलब्धियों पर वामपंथी साहित्यकारों ने न केवल मौन सदा है, अपितु समस्त उपलब्धियों को बिसरा दिया है। उनको छुपा दिया है, और चेतना का प्रस्फुटन वह 19वीं शताब्दी से मानते हैं जब हम अतीत को झाक कर देखते हैं, तो भारतीय महिला स्वतंत्र सेनानियों का इतिहास बहुत समृद्ध है पर अतीत के लेख में कहीं छुप गया है। लेख के द्वारा कुछ ऐसी स्वतंत्र महिला सेनानियों पर दृष्टि डालते हैं।

अरुणा अशरफ अली : बहुत ही कम लोगों ने उनके बारे में यह सुना होगा कि जब वह 33 साल की थी तब उन्हें सन् 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ग्वालियर टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज फहराया था, बम्बई, कोलकाता, दिल्ली आदि शहर में घुम घुम कर वह जागृति फैलाने की कोशिश की। 1942 से लेकर 1946 तक देशभर में सकरिया पुलिस की पकड़ में ना आकर, अपना कार्य किया, बहुमूल्य देश का कार्य किया।

रानी चेन्नम्मा: रानी चेन्नम्मा के साहस उनकी वीरता के कारण पुरा देश उन्हें जानता है खास तौर से कर्नाटक में विशेष सम्मान हासिल है। उनका नाम झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के संघर्ष के पहले ही रानी चेन्नम्मा ने युद्ध में अंग्रेजों के साथ कांटे का टक्कर दिए। अंग्रेजों

के साथ युद्ध में उन्हें हार मिली, लकिन उसके बावजूद भी अंग्रेजों रानी चेन्नम्मा को कैद कर लिया और उनका निधन हो गया, लेकिन अपनी आत्मा से तो नहीं हारी।

उदा देवी पासी : 1857 की एक अद्भुत महिला जिन्होंने 36 अंग्रेजी सैनिकों को मार गिराया। उत्तर प्रदेश के लखनऊ (सिकंदर बाग) में, इस लड़ाई के दौरान ऊदादेवी ने पुरुषों के वस्त्र धारण कर स्वयं को एक पुरुष के रूप में तैयार किया था। लड़ाई के समय वह अपने साथ एक बंदुक और कुछ गोला लेकर एक पेड़ पर चढ़ गई थी ब्रिटिश सैनिकों को सिकंदराबाद में तब तक प्रवेश नहीं करने दिया जब तक कि उनका गोला बारूद खत्म नहीं हो गया था वीरंगना जब पेड़ से उतर रही थी तो उनके शरीर को गोलियों से छलनी कर दिया गया। यकीनन भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चंद्रशेखर आजाद इन सभी की कुर्बानियों को भुलाया नहीं जा सकता है। इतिहास के पन्नों पर इनको भी सम्मान मिलना चाहिए।

मातंगिनी हाजरा : एक ऐसी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थी जिन्होंने भारत छोड़ों आंदोलन और सहयोग आंदोलन कें दौर में भाग लिया था, एक जुलूस के दौरान वह भारतीय झंडे को लेकर आगे बढ़ रही थी और पुलिस कर्मियों ने यू एन पर गोली चला दी। उनके शरीर में तीन गोलियाँ लगी फिर भी झंडा नहीं छोड़ा और वे वंदे मातरम् का नारा लगाती रही और आगे बढ़ती रहीं।

पोट्टी श्री रामुलु: महात्मा गाँधी की कटर समर्थक और भक्त थी, अर्थात अहिंसा की पुजारी थी। जब गाँधी जी ने देश और मानव प्रयासों के प्रति उनकी निष्ठा देखी तो कहा अगर मेरे पास श्री रामुलु जैस 11 और समर्थक हो जायें तो मैं एक वर्ष में भारत को स्वतंत्र कर लूंगा। लगातार अहिंसा वादियों की मदद करती रही और हमेशा ही पूरी निष्ठा से देश का कार्य करती रही।

भीकाजी कामा- देश के कई शहरों में उनके नाम पर बहुत सारी सड़क और भवन है लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि वह कौन थी और उन्हें क्या काम किया, न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान बल्कि भारत जैसे देश में लैगिक समानता की पक्षधर एक नेता थी। उनकी अपनी संपत्ति का एक बड़ा भाग लड़कियों के लिए अनाथालय बनाने पर खर्च किया था, वर्ष 1907 में उनके अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भी (जर्मनी) में भारत का झंडा फहराया था।

तारा रानी श्रीवास्तव - बिहार के सिवान नगर के पुलिस ठाणे पर उनके पति के साथ एक जुलूस का नेतृत्व किया था। उनको गोली मार दी गई थी लेकिन वह अपने घाव पर पट्टी बांधकर आगे चलती रही और नारा लगाती रही जब हम लौटते हैं तो उनकी मौत हो गई थी, लेकिन मरने से पहले वह देश के झंडे को लगातार पकड़ी रही।

प्रीतिलता वादेदार और कल्पना दत्ता -ब्रिटिश राज को हिलाकर रख देने वाली बंगाली क्रांतिकारी है। क्रांतिकारी सूर्य सेन के नेतृत्व में सशस्त्र स्वतंत्रता आंदोलन की शुरूआती की सदस्यों में से थी। प्रीतिलता और कल्पना के नाम भले ही समय की रेत के साथ फिके पड़ गए हो लेकिन बंगाल के लोगों के लिए यह कठोर इच्छा शक्ति और फौलादी महिलाएँ थी जिन्होंने भारत को ब्रिटिश उपनिवेशों की बेड़ियों से मुक्त करने का प्रयास किए यह उतने ही महान है जितने की अन्य सभी युवा क्रांतिकारी। फिर भी इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों के पन्नों में महिलाओं का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। प्रीतिलता आज तक बंगाल की लौह महिला के रूप में पूजनीय हैं, जिन्होंने 1932 में ब्रिटिश अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण करने के बजाय खुद को मारने का फैसला किया। एक खूनी मुठभेड़ के बाद जिससे वह बुरी तरह से घायल हो गई। वह केवल 21 वर्ष की थी। असाधारण साहसी क्रांतिकारी के सबसे कम महत्वपूर्ण कृत्यों में से एक था। यह तथ्य कि वह अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाने वाली पहली बंगागली महिला थी और यहाँ तक कि मास्टर दा के मार्गदर्शन में कई ब्रिटिश विरोध अभियानों का नेतृत्व भी किया, इससे आपको अंदाजा हो सकता है कि वह कितनी निडर योद्धा थी। जब इन्हें मास्टर दा के द्वारा 40 पुरुषों की टीम का नेतृत्वकर्ता चुना गया। अंग्रेजों से मुठभेड में सारे साथियों को बाहर निकालते हुए स्वयं यह फँस गई लेकिन आत्म समर्पण नहीं की और इन्होंने पोटैशियम सायनाइड चाट कर अपनी जान दे दी, लेकिन अंग्रेजों के हाथों पकड़ाना इन्होंने अपने सम्मान के खिलाफ समझा ऐसी वीरांगनाओं की गाथा पाठ्य-पुस्तकों से वंचित है। इनकी क्रांतिकारी साथी कल्पना दत्त इनकी वीरता की कहानी अद्भुत है।

1995 में कल्पना दत्त ने अपनी अंतिम सांस ली अपनी बहू मानिनी चटर्जी को घटनाक्रम के बारे में बताया प्रीतिलता की तरह कल्पना भी एक शिक्षित युवती थी अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने की इच्छा को पाला और एक अर्द्ध क्रांतिकारी छत्री संगठन संघ में शामिल हो गई। उनकी मुलाकात प्रतिलता से हुई। क्रांतिकारी विचारो ने कल्पना दत्त को प्रभावित किया। विस्फोटकों और अन्य आपूर्तियों के परिवहन की जिम्मेदारी सौंपे जाने के अलावा, कल्पना गन कॉटन, एक विस्फोटक एजेंट तैयार करने में भी विशेषज्ञ बन गई।

शोभा रानी दत्तः भारत अंग्रेजों से स्वतंत्रता पाने का अपना आजादी का अमृत महोत्सव मन रहा है यकीन चरखे से मिली आजादी काफी शोर मच रहा है ऐसे में उन महिलाओं के चेहरे के विषय में भी बात की जाए जिन्होंने स्वतंत्रता के यज्ञ के लिए अपना जीवन अपने सुख की आहूति दे दी 1906 में कोलकाता में जन्मी शोभा रानी दत्त एक राजनीति चेतना संपन्न परिवार से थी बहुत सारे आंदोलन सक्रिय भूमिका निभाई, क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया। उन दिनों डलहौजी इस्केवर कांड में पुलिस कमिश्नर पर आक्रमण के बाद अपने साथियों मजूमदार अनुज सेन मनोरंजन राय आदि फरार चल रहे जिन्हें शोभरानी ने अपने घर में शरण दी और गाड़ी से सुरक्षित पटुरिया गाँव तक पहुँचाया। आई एस आई बम कांड में उज्ज्वला मजूमदार क्रांतिकारी को शोभरानी ने अपने घर में शरण दिया और दोनों गिरफ्तार कर लिए गए, यातनाएँ ऐसी दी गई कि उनका मानसिक संतुलन खो गया। उनके साथियों का नाम बताने को कहा गया, लेकिन उन्होंने यत्नेन सहना स्वीकार किया, पर अपने साथियों के विषय में कुछ नहीं बताया। अंग्रेज इतने रहम दिल नहीं कि अपने आप चले जाएँ। हमें बलिदान और आह्वान ने हमें स्वतंत्र भारत दिया है।

दुर्गा भाभीः भारत की आजादी के लिए अपनी जान की पर्व किए बिना अंग्रेजों से लड़ने वाली महिला स्वतंत्रता सेनानियों का भी विशेष महत्त्व है। देश की आजादी की लड़ाई के लिए महिलाओं ने खुद को बलिदान कर दिया उनमें से एक नाम है दुर्गा भाभी भले ही भगत सिंह, सुखदेव राजगुरु जी की तरह वहीं फांसी पर नहीं चढ़ती लेकिन कंधे से कंधा मिलाकर वह आजादी की लड़ाई लड़ी स्वतंत्र सेनानियों के हा आक्रमण का योजना का हिस्सा बनी दुर्गा भाभी बम बनाना सीखी और इसका प्रयोग करना सीखा। दुर्गा भाभी को भारत की आयरन लेडी भी कहा जाता है। दुर्गा भाभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की प्रमुख सहयोगी थी। लाला लाजपत राय की मौत के बाद सांडर्स की हत्या की योजना बनाई गई जिसमें दुर्गा भाभी भी शामिल थी हम भगत सिंह और उनके साथियों का नाम तो जानते हैं, लेकिन दुर्गा भाभी ने इसमे सहयोग किया था यह बात कहीं छुपा कर रह गई। 23 मार्च को शहीद दिवस के नाम से हम जानते है लेकिन हमें यह जनना है कि इस दुर्गा भाभी ने भगत सिंह और उनके साथियों की जमानत के लिए एक बार अपने गहने तक बेच दिये। वीरांगनाओं की गाथाओं का यह बस कुछ हिस्सा है।

सुचेता कृपलानीः प्रसिद्ध भारतीय स्वतंत्रता सेनानी एवीएन राजनीति थी भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री थी यह बात तो हम सभी जानते हैं, लेकिन भारतीय समाज के निर्माण में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। उनचंद महिलाओं में यह भी शामिल थी जिन्होंने महात्मा गाँधी के साथ मिलकर भारत की आजादी में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। नोवाखली यात्रा में बापू के साथ थी, गांधी जी के साथ चलते हुए पीड़ित महिलाओं की मदद की, साथ ही भारत छोड़ो आंदोलन में सुचेता कृपलानी ने लड़कियों को ड्रिल और लाठी चलाना सिखाया। प्राथमिक चिकित्सा और संकट में घिर जाने पर आत्मरक्षा के लिए हथियार चलाने की ट्रेनिंग भी दी। राजनीति कैदियों के परिवार को राहत देने का जिम्मा भी उठाती रही, खतरों के समय महिलाओं को राहत भी पहुँचाती रही।

ननी बाला घोषः कोलकाता के हावड़ा में जन्मी यह क्रातिकारी एक साहसी और बहादुर महिला थी। 11 वर्ष की आयु में इनका विवाह हो गया था। 5 वर्ष के बाद यह विधवा हो गई थी, क्रांतिकारी गतिविधियों से ये जुड़ी हुई थी। एक बार जेल में क्रांतिकारी रामचंद्र मजमूदार, पैसे की कमी थी एक रिवाल्वर का पता लगाना था। विधवा होने के बावजूद भी, वह रामचंद्र की पत्नी बनकर उनसे जेल में भेंट करने गई। राष्ट्रीय सेवा को इन्होंने सबसे बड़ा लग गया। नानी बाला गिरफ्तार हो गई और अंग्रेजों ने इनके साथ अमानवीय व्यवहार किया। लाल मिर्ची के

शरीर में डाल दी गई। उसके बावजूद भी इन्होंने महिला पुलिस को थप्पड़ मारा और बेहोश हो गई। भूख, हड़ताल, इतनी प्रताड़ना सहने के बावजूद भी इन्होंने पुलिस को पूरी ताकत से एक घुसा मारा, इन सारी बातों का लिखने का उद्देश्य है। आजादी हमें एक दिन में नहीं मिली है, सैंकड़ों लोगों ने अपने कुर्बानी दी है।

कनकलता बरूआ: इनका जन्म 22 दिसम्बर 1924 को असम के सोनीपुर जिले के गोहपुर गांव में हुआ था। 20 सितम्बर 1942 को तेजपुर कचहरी पर तिरंगा फहराने का निर्णय हुआ। उस दिन बाइस साल की कनकलता तिरंगा हाथ में थामे जुलूस का नेतृत्व कर रही थी। अंग्रेजी सेना की चेतावनी के बाद भी वे रूकी नहीं और छाती पर गोली खाकर शहीद हो गई। अपनी वीरता व निडरता के कारण वे वीरबाला के नाम से जानी गई। आज सबसे कम उम्र की बलिदानी कनकलता का नाम भी इतिहास के पन्नों से गायब है।

बीनादास: बीनादास का जन्म 24 अगस्त 1911 को बंगाल प्रांत के कृष्णानगर गांव में हुआ था। वे कोलकाता में महिलाओं द्वारा संचालित अर्द्धक्रांतिकारी संगठन छात्रा संघ की सदस्या थी। 1928 में उन्होंने साइमन कमीशन का विरोध किया। 1932 में उन्हें एक दीक्षांत समारोह में बंगाल के गवर्नर स्टैनली जैक्सन को मारने की जिम्मेदारी दी गई। इस समारोह में उन्हें भी डिग्री मिलनी थी। स्टेनली जब भाषण देने लगा, वे अपनी सीट से उठीं और गवर्नर के सामने जाकर गोली चला दी। उनका निशाना चूक गया, स्टेनली बच गया, परंतु उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। क्या विरंगना को उपयोग भाषण समारेह में डिग्री मिलने वाली थी, इसके बावजूद भी उन्हें 10 साल की सजा मंजूर और जेल में उन्हें बहुत सारी यातनाएँ मिली, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपने साथियों का नाम नहीं बताया।

अज़ीजुंबाई: तवायफ नाम सुनकर अक्सर लोगों का मन घृणा से भर जाता है, लेकिन आज हम आपका तवायफों के एक ऐसे रूप से परिचय करायेंगे, जिससे आपके मन में इनके प्रति सम्मान जाग जायेगा। अजीजुबाई, होससैनी तथा गौहर जान, ये वो नाम है जो देश की स्वतंत्रता के लिए कंधे से कंधा मिलाकर लड़ी थी। भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम 1857 तवायफों के योगदान का गवाह रहा है।

कस्तूरबा गाँधी: ये महिला कोई और नहीं बल्कि महात्मा गाँधी की पत्नी कस्तूरबा गाँधी थी। अगर गाँधी जी देश के हर नागरिक के लिए बापू हैं तो कस्तूरबा सबके लिए है। ये उपाधि उन्हें सिर्फ महात्मा गाँधी की पत्नी होने के कारण नहीं मिली, बल्कि कस्तुरबा गाँधी ने भी आजाद भारत के लिए सपना देखा था। उन्होंने महिलाओं को स्वच्छता, अनुशासन, स्वास्थ्य, पढ़ना और लिखना सिखाया। 1922 में उन्होंने बोरसद, गुजरात में एक सत्याग्रह (अहिंसक प्रतिरोध) आंदोलन में भाग लिया, भले ही उनका स्वास्थ्य खराब था।

अंजलाई अम्मल: अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत 'असहयोग आंदोलन' से की थी। जून 1890 को कदलूर (तमिलनाडु) के छोटे से शहर मुथु नगर में जन्मी अंजलाई अम्मल एक सामाजिक सुधारक एवं स्वतंत्रता सेनानी थीं। उनका जन्म बहुत ही साधारण परिवार में हुआ था। उनकी पढ़ाई कक्षा पांचवी तक ही हो पाई थी।। उनके पति एक मैगजीन में एजेंट थे। अंजलाई अम्मल ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत 'असहयोग आंदोलन' से की थी। यही कारण है कि अंजलाई अम्मल को 1921 में असहयोग आंदोलन में भाग लेनेवाली पहली दक्षिण भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त है। इस आंदोलन का हिस्सा बनने के बाद वह कभी भी पीछे नहीं हटीं। वह लगातार अलग-अलग आंदोलन में भाग लेती रहीं। उन्होंने राजनीति में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और इस पुरुष समाज में अपना एक विशेष स्थान बनाया।

सुहासिनी गांगुली: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सेनानी थी। वह क्रांतिकारी के साथ-साथ एक अध्यापिका थी। स्नातक के बाद एक तैराकी स्कूल में इन्होंने दाखिल लिया। उसी दौरान कल्याणी दास और कमला दास के संपर्क में आए और क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ गई। सुहासिनी गांगुली इन क्रांतिकारियों को सुरक्षा देने के लिए कोलकाता से चंदन नगर पहुँचे इसके पहले वह कोलकाता में गूंगे बहरे बच्चों के एक स्कूल में कार्य कर रही थी चंदननगर पहुँचकर उन्होंने वहीं एक स्कूल में अध्यापन कार्य ले लिया। शाम से सुबह तक क्रांतिकारियों की सहायता में वह अपना समय व्यतीत करती थी और अध्यापिका बनकर पढ़ाती थी। ऐसी वीरांगना जो बारी-बारी

से अपने कार्य को पूर्ण करती थी।

पंजाब माता विद्यावती देवी जी: इतिहास इस बात का साक्षी है कि देश धर्म और समाज की सेवा में अपना जीवन अर्पण करने वाले के मन में ऐसे संस्कार उनकी माताओं ने ही डाला है जो भारत में ऐसे वीर सुपुत्र जन्में है। उस वीर की माता श्रीमती विद्या देवी कौन जिन्होंने माता विद्यावती का ससुराल देश प्रमियों से भरा हुआ था। उन्होंने अपनी आंखों के सामने अपने पति देवर और पुत्र को देश के लिए आहुति देते अपनी आँखों से देखा। भगत सिंह अपनी माता से अत्यंत प्रेम करते थे जब फांसी देने का वक्त आया, तो उन्होंने अपनी माता से बुलाकर कहा ''बेबो जी मेरे लाश लेने मत आना कुलबीर ने भेज देना कहीं तू रो पड़ी तो लोग कहेंगे कि भगत सिंह की मां रो रही है ''इस पर माता ने जवाब दिया ''शहीदों के लिए रोया नहीं जाता है बल्कि उनकी आरती और तिलक की जाती है''। ऐसी वीर माता विद्यावति ने अपने जीवन काल में अपने पति, देवर और पुत्रों को ब्रिटिश शासन को दी गई भयंकर यातनाएं सहते देखा। वे आजादी के बाद भी जिंदा रहीं। उन्हं पंजाब माता की उपाधि से विभूषित किया गया और जब तक वह जीवित रही हर शहीद देश प्रेमी के घर जाकर वह अपने पेंशन के पैसे से उनकी मदद करती रही। समस्त भारतवर्ष ऐसी माता का ऋणी रहेगा।

जागरानी देवी : चंद्रशेखर आजाद की माता जागरनी देवी, चंद्रशेखर आजाद के शहीद हो जाने के बाद माता जागरनी देवी को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उन्हें कई कई दिनों तक गेहूं और चावल को ग्रहण नहीं किया। पैसे की कमी के कारण उनकी लकड़ियाँ चुनकर अपना गुजारा करना पड़ता था। सत्तू और बाजरे का घोल पीकर अपना गुजरा करती थी लेकिन जीवन के इस संघर्ष में भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी । एक बार जंगल में लकड़ी बिन रही एक मैली सी धोती में लिपटी बुजुर्ग महिला से वहाँ खड़े एक भील ने हंसते हुए कहा-अरे बुढ़िया तू यहाँ न आया कहर, तेरा बेटा तो चोर-डाकू था, इसलिए गोरों ने उसे मार दिया।''

लेकिन बुढ़िया ने बड़े ही गर्व से कहा-'नहीं चंदू ने देश की आजादी के लिए कुर्बानी दी है''

बुजुर्ग औरत का नाम जगरानी देवी था, जिन्होंने पाँच बेटों को जन्म दिया। इसी माँ का आखिरी बेटा कुछ दिनों पहले ही शहीद हुआ था। माँ जहाँ अपने इस लाडले बेटे को चंदू कहती तो वही दुनिया उसे चंद्रशेखर आजाद के नाम से जानती है।

निष्कर्ष:

प्रसिद्ध स्वतंत्र सेनानियों को परिभाषित करने की आवश्यकता उतनी नहीं होती क्योंकि उनके आदर्श भारतीय मूल्य प्रणाली को चित्रित करते हैं, लेकिन नई पीढ़ी के लिए गुमनाम स्वतंत्र महिला सेनानियों का चित्रण करना आवश्यक है, क्योंकि अतीत में पड़ी धुंधली स्मृतियों को सामने लाना आवश्यक है और इतिहास में तथ्यों को शामिल करना आवश्यक है, क्योंकि यह हमारी आत्माओं को समृद्ध करता है। हमारी स्वतंत्रता की कहानियाँ वीरता, बहादुरी, समर्पण, क्रांति और शांति से भरा हुआ है। लोकाचार और सिद्धांत को याद करना, साथ ही गुमनाम महिला स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मान देना। साथ में आने वाली पीढ़ी को स्वतंत्रता संग्राम में गुमनामी के अंधेरे में छिपी महिलाओं की याद कराना, ताकी भारतीय विरासत और उसके मूल्य को खंडित होने से बचायें, क्योंकि झांसी की रानी के बारे में जाननेवालों का प्रतिशत ज्यादा हैं, लेकिन चारू शिला, पूर्णिमा बनर्जी, सुहासिनी दत्त, इंदूमति, प्रतिभा देवी नन्ही बाला घोष, प्रीति लता बडेदर, उषा मेहता और न जाने कितनी सेनानियों का नाम इतिहास के पाठयपुस्तक में एक अध्याय देना है और यही इनकी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. कृपलानी, सुचिता-सुचिता एन अनफिनिश्ड ऑटो बायोग्राफी, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद-1978
2. htt:/bharatdiscovery.org
3. http:/heritagetimes.in
4. http:/ mwikpedia.org
5. books.google.co.in
6. http:/www.deepawali.co.in
7. www.google.com

❖❖❖